शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-1, Year-1,

15 Jan-2010

राजस्थानी चित्रों में दैनिक जीवन का रूपांकन

-डॉ० दीप्ति सक्सेना

प्रवक्ता, चित्रकला विभाग, डी.ए-वी, कॉलेज, कानपुर

www.shodh.net

राजस्थानी चित्रों में दैनिक जीवन का रूपांकन

- डॉ० दीप्ति सक्सेना

किसी स्थान के नाम विशेष के पीछे वहाँ की कुछ भौगोलिक एवं ऐतिहासिक विशेषतायें होती हैं जो अपना प्रभाव छोड़ती हैं। प्राचीन समय में जिन भू-भागों में समुद्र-तल लहराता था जिनका प्रमाण वहाँ पर प्राप्त सीप, शंख, घड़ियाल, मछलियों, मगर आदि के अवशेषों से मिलता है।[1] वाल्मीकि रामायण में भी वहाँ पर समुद्र तल होने के प्रमाण हैं। जब भगवान श्री रामचन्द्र जी वनवास पूरा कर, रावण का संहार कर विजय प्राप्त कर अयोध्या वापस आ रहे थे, तब इस स्थान पर इन्होंने ऐसा अमोघ बाण[2] मारा कि समस्त सागर सूखकर एक रेगिस्तान के रूप में परिवर्तित हो गया।[3] संस्कृत के अमरकोश में भी उल्लेख मिलता है कि प्राचीन काल में इसे 'मरु' के नाम से ही पुकारा जाता था।[4] हितोपदेश-संस्कृत ग्रन्थ में इसे 'मरुस्थल[5], एक अन्य ग्रन्थ में 'मरु-भेदनी', प्रबन्ध चिन्तामणि ग्रन्थ में मरु-मण्डल[6], माखा[7], हम्मीर मद मर्दन ग्रन्थ में 'मरु-देश'[8], अमर काव्य में इसे 'महाकान्तार', 'मरुधरा'[9], महाभारत में इसे 'जंगल-देश' कहा गया है। इसी कारण बीकानेर के शासक स्वयं को जंगलधर बादशाह कहलवाने मे गौरवान्वित होते थे[10] अत: स्पष्ट है कि जिस प्रदेश को आज 'राजस्थान' नाम से जाना जाता है, किसी एक नाम से ही प्रसिद्व नहीं रहा, बल्कि भौगोलिक परिस्थितियों एवं अन्य परिवर्तनों के कारण समय-समय पर इसका नामकरण होता गया।

ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं की भाँति राजस्थान की भौगोलिक स्थिति भी अनेक विशिष्टताओं से युक्त रही है हर देश की कला एवं संस्कृति पर वहाँ की भौगोलिक वातावरण का प्रभाव पड़ा है, जिसके अनुरूप वहाँ की कला और संस्कृति पनपती है।[11] राजस्थान की चित्रकला भी वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों से प्रभावित हुई है। राजस्थान का आकार एक विषम कोणीय चतुर्भुज के समान है। जिसके उत्तर में बीकानेर, पश्चिम में जैसलमेर, दक्षिण में झालावाड़ तथा पूर्व में धौलपुर की सीमा है। राजस्थान की भौगोलिक अवस्थाओं का वहाँ के ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा कलात्मक पहलुओं पर अत्यन्त गम्भीर प्रभाव पड़ा है। राजस्थान को पर्वतीय भाग की अरावली पर्वत श्रेणियाँ दो भागों में विभाजित करती है पश्चिमोत्तर 3/5 भाग व दक्षिण पूर्व 2 /5 भाग। यह पर्वत श्रृंखला राजस्थान के मरुभूमि में परिवर्तित होने के लिये महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि अरब सागर से उठने वाली मानसून हवाओं के समानान्तर यह पर्वत श्रेणी होने के कारण मानसून बिना बरसे ही इन पर्वतों के सहारे-सहारे निकल जाते हैं और राजस्थान सूखा ही रह जाता है। किन्तु विदेशी आक्रमणों से सुरक्षा की दृष्टि से इन अरावली पहाड़ियों का बड़ा महत्त्व है। इसी कारण इसके किनारे-किनारे उच्च कोटि की स्थापत्य कलात्मकता लिये हुऐ अनेक दुर्गो,गढ़ों आदि का निर्माण हुआ व छोटी-छोटी बस्तियाँ विकसित हुई। राजस्थानी चित्रकारों ने इन पर्वत श्रेणियों को अत्यन्त सुन्दर ढंग से रूपायित किया।[12] इस क्षेत्र की प्रचलित कहावतों में लोक संस्कृति की झाँकी भी इसी पर्वत श्रृंखला की प्रेरणा व देन है। इनसे प्राप्त खनिज सम्पत्ति ने इस क्षेत्र के सांस्कृतिक विकास को एक महत्वपूर्ण आर्थिक संबल प्रदान किया है।

राजस्थान के पठारी भाग को 'ऊपर माल' नाम से भी पुकारा जाता है। जहाँ पूरे प्रदेश की सर्वाधिक हरियाली दिखायी देती है। इसी कारण बूंदी के चित्रों में अनुपम प्राकृतिक छटा के दर्शन होते है। अरावली के पश्चिम का अधिकांश भाग रेतीला होने के कारण वहाँ जलवायु गर्म व शुष्क है। प्रचंड गर्मी एवं भयंकर शीत यहाँ की विशेषता है जो आर्थिक पिछड़ेपन व निर्धनता का कारण बनती है। जनसंख्या बहुत कम है, जो है भी वह पानी के समीप बसी है। अपनी विवशता के कारण वे प्रवासी जीवन बिताने के लिये बाध्य हैं। इसे उनकी कला एवं साहित्य दोनों में पूर्णरूप से देखा जा सकता है[13] **शुष्क वातावरण, कठोर जीवन व लू आदि से बचने के लिये घरों के अन्दर रहकर ही समय व्यतीत करने की अनिवार्यता ने उनके जीवन में एक रिक्तता सी भर दी है। जीवन को जीवन्तता प्रदान करने के लिये सांस्कृतिक क्रिया-कलापों द्वारा निराशा को आशामय बनाने का उन्होंने सदैव प्रयास किया है। यहाँ की राष्ट्र गान परम्परा, कठपुतलियों के खेलों द्वारा मनोरंजन, विभिन्न उत्सवों में मेलों का आयोजन[१४] भड़कीले व चटख रंगों वाले वस्त्रों का पहनावा आदि सभी यहाँ के परिस्थितियों की बहुत बड़ी देन है।**

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-1, Year-1,

15 Jan-2010

राजस्थानी चित्रों में दैनिक जीवन का रूपांकन

-डॉ० दीप्ति सक्सेना

प्रवक्ता, चित्रकला विभाग, डी.ए-वी, कॉलेज, कानपुर

www.shodh.net

राजस्थानी मैदानों के विषय में जानकारी कई ऐतिहासिक ग्रन्थों द्वारा प्राप्त प्रमाणों के आधार पर की जा सकती है।[15] ये सीमा क्षेत्र दक्षिणी भाग में पहाड़ों की घाटियों में अवस्थित होने के कारण अत्यधिक उपजाऊ है। ये क्षेत्र प्राकृतिक छटा बढ़ाने के साथ-साथ आर्थिक विकास के दृष्टिकोण से बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। यहाँ समृद्धशाली नगर हैं जो व्यापार के उन्नत केन्द्र हैं। आवागमन के साधन सुगमता से उपलब्ध होने के कारण, उर्वरभूमि एवं पानी की समुचित व्यवस्था आदि के कारण यह क्षेत्र निरन्तर उन्नति करता गया, जो यहाँ की सांस्कृतिक समृद्धि का कारण बना।[16]

राजस्थानी चित्रकला में राजस्थान के जनजीवन की झाँकी का ऐसा सशक्त चित्रण हुआ है जिससे वहाँ का तत्कालीन जीवन एक चित्रमाला के रूप में दृष्टि पटल पर अवतरित होता प्रतीत होता है। घर, खेत-खलिहान, मेले, उत्सव, तीज-त्योहार, शिकार, युद्ध, धार्मिक जीवन, रागमाल, ऋतु चित्रण, बारहमासा, श्रृंगार रसयुक्त चित्रण आदि सभी पर चित्रकारों की समदृष्टि रही है। समस्त जनता अपने जीवन की अभिव्यक्ति इन रूपों में प्रस्तुत करती दिखायी देती है। उनकी सरलता, सहजता, स्वतन्त्रता तथा स्वाभाविकता दर्शक के लिये एक उदाहरण बन जाती है। इनके घर बाहर दोनों ही रूप भारतीय परम्परा एवं संस्कृति के द्योतक हैं।

राजस्थान की प्राचीन से प्राचीन संस्कृति का स्वरूप भित्ति चित्रों एवं ग्रन्थों से जाना जा सकता है। **यहाँ की शुष्क जलवायु ने हरियाली तथा रंग-बिरंगे फूलों के अभाव ने राजस्थानी नागरिकों के हृदय में एक टीस सी उत्पन्न कर दी, जिसको दूर करने के लिये यहाँ के निवासी तथा कलाकार रंगों के प्रति लालायित हो उठे। परिणामस्वरूप जनमानस ने अत्यन्त चटख रंग-बिरंगे वस्त्रों को धारण कर अपने जीवन के हर क्षेत्र को रंगमय बना लिया, जिसका प्रभाव हमें तत्कालीन राजस्थानी चित्रों में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।** यहाँ के दैनिक जीवन से सम्बन्धित विषयों के चित्रांकन में साधारण जीवन हो या दरबारी, जीवन के दोनों पक्षो - लोक तथा निजी, का चित्रण विशेष रूप से हुआ है। इनमें धार्मिक तथा आध्यात्मिक विषयों में भी राजस्थानी समाज के दोनों पक्षों का चित्रांकन सामने आता है।[17] अधिकांश राजस्थानी चित्रों में राजपूती जीवन एवं संस्कृति का चित्रण मिलता है। सामन्तों में भी दरबारी जीवन की छाप थी।[18] राजपूत नरेशों के मुगल दरबारों से प्रत्यक्ष सम्बन्ध रहे थे, अत: तत्कालीन राजस्थानी स्थापत्य, साहित्य एवं कला पर उनके वैभव और अतुल ऐश्वर्य की गहरी छाप छोड़ी।[19]

कला समाज का दर्पण होती है राजस्थानी चित्रकला में तत्कालीन समाज की दैनिक गतिविधियों, सामाजिक रीति-रिवाजों एवं पर्वों का स्वाभाविक चित्रण हुआ है। आरम्भ से अन्त तक तत्कालीन समाज की मनोदशाओं के आधार पर शान्त एवं स्वर्गीय पुरखों की भावनाओं का चित्रण हुआ है। यही कारण है कि दैनिक जीवन से सम्बन्धित सभी चित्रों में धार्मिक, सामाजिक, लोक, सात्विक, दरबारी आदि तत्वों का समावेश हुआ है। जो तत्कालीन सरल सामाजिक व्यवस्था का सही प्रतिबिम्ब है। महाराजा भीमसिंह के राज्यकाल में कृष्ण-विलास के भित्ति चित्रों मे सामाजिक पर्वो, उत्सवों तथा रीति-रिवाजों का चित्रण है।[20] राजस्थानी चित्रों में सामान्य नागरिक के रहन-सहन का, तथा दैनिक जीवन का बड़ा ही सुन्दर एवं सजीव चित्रण हुआ है। राजस्थान की विभिन्न रियासतों में पल्लवित चित्रण परम्परागत मुगल कला की तुलना में दरबार से कम बंधी थी। हिन्दू संस्कृति से ओत-प्रोत राजस्थानी चित्रों मे धर्म के अतिरिक्त साहित्य, संगीत तथा लोक तत्वों का सम्मिश्रण था। खेलों मे शतरंज, चौपड़, दसखाना, सांप निसैनी, आतिशबाजी, पक्षी पालना, संगीत-नृत्य की महफिलों के चित्र, घुड़सवारी करना, कुंज-क्रीड़ा, वाटिका विहार, पंखा चलाती, चंवर डुलाती इत्यादि दैनिक जीवन से सम्बन्धित अनेकों विषयों को चित्रकारों ने अपनी तूलिका के माध्यम से साकार रूप प्रदान किया।

राजस्थानी दरबारी कलाकारों ने अपने आश्रयदाताओं के जीवन के सभी प्रमुख प्रसंगों का अंकन किया है- राजसभा, अदालत, भेंट लेते हुये, हुक्का पीते हुये, चित्र नृत्य एवं भांडों का तमाशा देखते हुये, उत्सव मनाते हुये, शिकार पर जाते हुये, शिकार करते हुये सम्राटों का अंकन किया है। इनके अतिरिक्त सेना, अस्त्रागार, युद्ध की तैयारी, युद्धाभ्यास, युद्ध के लिये प्रयाण एवं युद्ध का अंकन किया है।

राजस्थानी शैली में माधुर्य भक्ति का अधिक प्रचार मिलता है। अत: इस काल की भक्ति एवं श्रृंगार सम्बन्धी रचनायें एक जैसी प्रतीत होती है। कृष्ण के शैशव एवं यौवन लीला से सम्बन्धित चित्र, बाल चरित्र मे

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-1, Year-1,

15 Jan-2010

राजस्थानी चित्रों में दैनिक जीवन का रूपांकन

-डॉ० दीप्ति सक्सेना

प्रवक्ता, चित्रकला विभाग, डी.ए-वी, कॉलेज, कानपुर

www.shodh.net

आंगन क्रीड़ा, चन्द्र खिलौना, दधि चोरी गोचारण, जल-क्रीड़ा, पक्षी एवं कन्दुक क्रीड़ा, भोजन, आँख मिचौली, वंशी वादन, असुर संहार, कालिया दमन आदि का चित्रांकन हुआ है। गोवर्द्धन धारण तथा रास मंडल के चित्र विशेष भक्तिपूर्ण बने है।

इस प्रकार राजस्थानी शैली में जीवन के प्रत्येक पक्ष से सम्बन्धित चित्रों की रचना हुई है। राजदरबार का अंकन हो अथवा सामान्य जन-जीवन, कर्तव्य पर आधारित चित्र हों या हास्य व्यंगपूर्ण चित्रण, रागमाला हो या ऋतुओं का अंकन व्यक्ति चित्र हो या समूह अंकन, भक्ति सम्बन्धी हो या श्रृगार सम्बन्धी, होड़, जीवन हो या दैनिक जीवन, हर विषय पर चित्रकार की तूलिका ने निर्बाध गति पायी है। उसकी तूलिका शारीरिक अनुपात व बनावट में यथार्थपूर्ण सभ्य मुद्राओं, माननीय भावों को स्पष्ट करने में दस चेहरों एवं नवीन विषयों व कल्पनाओं से युक्त रही है। राजस्थानी चित्रकार निरन्तर सिद्ध करते रहे हैं कि उन्होंने कलात्मक शैलियों में समृद्धि, सम्पूर्णता एवं सार्वभौमिकता विरासत में प्राप्त की है। उसे रेखाओं पर इतना अधिकार प्राप्त था कि उसकी नारी आकृति के सौन्दर्य वर्णन मात्र से ही उनकी कला की महानता स्पष्ट हो जाती है।

'Her Brow is like the moon, her shapely eyebrows like a bow her tremulous, bewitching eyes are like the sharp arrows of Kamdeva (The God of Love). Her breath has the fragnance of a lotus bud. Her teeth are like pearls and her laughter flashes like lightning. Her belby is shaped like a betel leaf, her feet like lotuses, and her gait graceful like a swan's."[21]

इस प्रकार हम देखते हैं कि तत्कालीन भारतीय जन जीवन तथा विश्वासों का इस शैली में बड़ा ही सुन्दर दिग्दर्शन हुआ है। दैनिक क्रिया कलापों को चित्रित करने के लिये चित्रकार उत्साहित रहते थे। जैसे-नट का तमाशा, बग्धी की सवारी, वट पूजन, झूला झूलती स्त्रियाँ, सरोवर पर क्रीड़ा करते पक्षी, कन्दुक क्रीड़ा, उद्यान विहार, ढोंगी साधु, अफीमची, स्थूलकाय दूल्हे, जूतों द्वारा पति की पिटाई[22] आदि इसी प्रकार के चित्र हैं जिनके द्वारा भारतीय राजस्थानी चित्रकला मे दैनिक जीवन के रूपांकन का स्पष्ट प्रमाण मिलता है।

संदर्भ

1- अग्रवाल, आर0 ए0 : कला विलास, पृ0 84 **2-** तस्य तद्वचन श्रुत्वा सागरस्य महात्मनः, मुमोच तं शरं दीप्त पर सागर दर्शनात्। 32। तन तन्मस्कांतर पृथिव्या किल विश्रुतम, निपरतितः शरों यत्र वज्राशीनलम् प्रभुः ।। 33 वाल्मीकि रामायण, युद्ध कसण्ड, सर्ग 22 **3-** वाल्मीकि रामायण, युद्ध कांड, सर्ग 221 **4-** अमरकोश, कांड .2 भूमि सर्ग **5-** हितोपदेश, मित्र लाभ, श्लोक।। **6-** प्रबन्ध चिन्तामणि, पृ0 275। **7-** प्रबन्ध चिन्तामणि, पृ0 284 **8-** हम्मीर मद मर्दन, जयसिंह सूरी - पृ0 11 **9-** अमर काव्य, कवि उमरदास, पृ0 322 **10-** महाभारत, भीष्म पर्व, अध्याय 9, श्लोक 56 **11-** डॉ0 गोपीनाथ शर्मा, सोशल लाइफ इन मेडिवल राजस्थान, पृ0 61 **12-** हरमन ग्वेट्ज, आर्ट एंड आर्किटेक्चर आफ बीकानेर स्टेट, पृ0 7 **13-** बारहमासा चित्रावली, जोधपुर, कुँवर संग्राम सिंह संग्रह, राजस्थानी लोकगीत, स्वर्णलता अग्रवाल, पृ0 117-118 **14-** अकबरनामा, पृ0 78-216 **15-** शिखा रानी गुप्ता, शोधग्रन्थ- राजस्थानी चित्रकला में समाज का रूप **16-** अम्बरीश बनर्जी, रोमान्टिसिज़्म इन इण्डिया, रूप रेखा अंक 27, पृ0 36 **17-** रघुबीर सिंह, पूर्व आधुनिक राजस्थान, पृ0 135 **18-** बच्चन सिंह, रीतिकालीन कवियों की प्रेम व्यंजना, पृ0 9 **19-** डॉ0 आर0 के0 वशिष्ठ, मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा, पृ0 55 **20-** चन्द्रमणि सिंह, जनानी ड्योढ़ी के मनोरंजन, नवभारत टाइम्स, संवत 1979, पृ0 40-42 **21-** Kangra Paintings on love. M.S Rendhawa, New Delhi, 1962, P 38 22. कला और कलम पृ0 127, 128, 138